ओ३म्

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 30 अक्टूबर से 02 नवम्बर 2025

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक शोध संगोष्ठी

विषय: स्वर्णिम भारत के नवनिर्माण में ऋषि परम्परा का योगदान

स्वागत मण्डल

स्थान: रोहिणी, नई दिल्ली

संरक्षक मण्डल: स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्रो. शशिप्रभा कुमार, डॉ. वेदपाल, प्रो. अतिमा शर्मा द्विवेदी, प्रो. वीरेन्द्र अलंकार , डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, आचार्या सुमेधा- सुकामा- नन्दिता शास्त्री- प्रीति विमर्शिनी- सूर्या देवी जी, प्रो. धर्मेन्द्र शास्त्री, प्रो. कमलेश चौकसी, प्रो. सुदेश छिकारा, प्रो. अन्जू सेठ।

संयोजक समिति: प्रो. रमा जी, प्रो.विनय विद्यालंकार, प्रो. कृष्णा रंगा, प्रो. प्रभात सेंगर, प्रो. सुरेन्द्र कुमार, प्रो.जवाहरलाल, प्रो.पुष्पेन्द्र जोशी, प्रो.भावप्रकाश, डॉ.प्रियंका एवं प्रतिभा, प्रो. रवि प्रकाश, प्रो. नरेश धीमान, प्रो. नीरज शर्मा, प्रो. जयप्रकाश, प्रो. एच एल वर्मा, डॉ. देवेश- शैलेश।

कृपया अपना 10 से 15 पंक्तियों का शोध सारांश 25 अगस्त तक iams2025delhi@gmail.com पर ईमेल के माध्यम से प्रेषित करें।

महासम्मेलन संयोजक
श्री विनय आर्य

संगोष्ठी संयोजक
प्रो० सुधीर कुमार आर्य

केन्द्रीय विषय

1. ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त ऋषियों की भारतवर्ष को देन
2. महर्षि दयानन्द की स्वतन्त्रता संग्राम को देन
3. भारतीय संन्यास परम्परा में योग के ऋषि
4. हिंदी तथा संस्कृत साहित्य लेखन परम्परा में महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा का योगदान
5. संस्कृत और संस्कृति के विकास में गुरुकुलों का योगदान
6. भारत के विभिन्न धार्मिक संप्रदायों में वेद- उपनिषदों का प्रभाव
7. सनातन परम्परा के वेदभाष्यकार तथा उनकी व्याख्या पद्धति
8. स्वर्णिम भारत के निर्माण में भगवान बुद्ध एवं महावीर की शिक्षाओं का योगदान
9. सनातन परम्परा के ऋषियों और आचार्यों की राष्ट्र को देन
10. सिक्ख परम्परा के गुरुओं का समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण में योगदान
11. भारतीय ज्ञान परम्परा में साधुओं, संतों एवं कवियों का योगदान

उपविषय

- वैदिक सृष्टिवाद
- वैदिक राष्ट्रवाद की संकल्पना
- वेद एवं भाषाविज्ञान
- वेद एवं आयुर्विज्ञान
- वेद एवं मनोविज्ञान
- वेद एवं पदार्थ-विज्ञान
- वेद एवं खगोलविज्ञान
- वेदों में विविध विज्ञान
- वैदिक शिक्षा और ध्वनि विज्ञान
- वेदभाष्यों में स्वरविमर्श
- निरुक्त और वेदार्थ
- वेदार्थ में वेदाङ्ग की भूमिका
- निरुक्त में निर्दिष्ट मन्त्रार्थ की त्रिविध प्रक्रिया
- शतपथ ब्राह्मण और याज्ञिक प्रक्रिया (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द,ज्योतिष का मन्त्रार्थ में भूमिका)
- वेदों में ऋषि एवं देवता विमर्श
- वेद और वेदपाठ पद्धति
- वेदों में इतिहास
- वैदिक तत्त्व-मीमांसा
- वैदिक-दर्शन विमर्श
- वेदमन्त्र और विनियोग
- वेदभाष्य में गुरुकुल के आचार्यों का योगदान
- वेद और अनुसन्धान की दिशाएँ
- वेदार्थ और महर्षि अरविन्द
- उपनिषदों में ऋषि एवं ऋषिकाएँ
- उपनिषदों में प्रतिपादित वर्णव्यवस्था
- उपनिषदों में प्रतिपादित आश्रमव्यवस्था
- उपनिषदों में प्रतिपादित विविध विद्याएँ
- उपनिषदों के संवाद
- उपनिषदों में विद्या-अविद्या
- उपनिषदों में ज्ञान, तत्त्व एवं आचार मीमांसा
- उपनिषदों में जीव मीमांसा
- उपनिषदों में ईश्वर मीमांसा
- उपनिषदों में ब्रह्म मीमांसा
- उपनिषदों में श्रेय एवं प्रेय विमर्श
- उपनिषदों में सम्भूति एवं असम्भूति विमर्श
- उपनिषदों में परा-अपरा विद्या
- उपनिषदों में मनोविज्ञान
- उपनिषदों में विज्ञान
- उपनिषदों में सामाजिक समरसता
- उपनिषदों में आध्यात्मिक समरसता
- उपनिषदों में द्वैतवाद,त्रैतवाद,अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद (विभिन्न भाष्यालोक में)
- प्रातिशाख्य और शिक्षा ग्रन्थों में वर्णित आचार-मीमांसा
- शिक्षाग्रन्थों के सन्दर्भ में प्राणी-विज्ञान
- महर्षि दयानन्द सरस्वती का सांस्कृतिक चिन्तन
- महर्षि दयानन्द सरस्वती का अध्यात्म-चिन्तन
- महर्षि दयानन्द सरस्वती का राष्ट्रीय चिन्तन
- महर्षि दयानन्द सरस्वती का शिक्षा दर्शन
- सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वेद भाष्यकार महर्षि दयानन्द की चिन्तनशैली
- आर्थिक परिप्रेक्ष्य में वेद भाष्यकार महर्षि दयानन्द की चिन्तनशैली
- वैश्विक चेतना के परिप्रेक्ष्य में वेद भाष्यकार महर्षि दयानन्द की चिन्तनशैली
- स्वामी दयानन्द एवं उनके अनुगामी वैदिक भाष्यकार
- पाश्चात्त्य वैदिक भाष्यकार एवं स्वामी दयानन्द
- महर्षि दयानन्द के वेदभाष्यों की विशेषताएँ
- आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में स्वामी दयानन्द एवं सायण का वेदभाष्य
- महीधरकृत याज्ञिक प्रक्रिया व स्वामी दयानन्द
- महर्षि दयानन्द एवं संस्कार विधि
- महर्षि दयानन्द एवं वेदाङ्गप्रकाश
- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और स्वामी दयानन्द
- स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं व्यवहार-विज्ञान
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और् आयुर्वेद
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और योगविद्या
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और शिल्पशास्त्र
- महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं अभियान्त्रिकी
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और राजधर्म
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और गौ-रक्षा
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और बाल शिक्षा
- महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वर्णव्यवस्था
- महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आश्रम व्यवस्था
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और ईश्वरवाद
- महर्षि दयानन्द का वैज्ञानिकभाष्य
- युवाशक्ति के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानन्द
- महर्षि दयानन्द एवं उनका संस्कृत प्रेम
- महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी भाषा को देन
- महर्षि दयानन्द सरस्वती की पत्रकारिता को देन
- महर्षि दयानन्द सरस्वती का लेखन
- विभिन्न लेखकों पर महर्षि दयानन्द का प्रभाव
- महर्षि दयानन्द सरस्वती और शुद्धि आन्दोलन
- महर्षि दयानन्द की अछूतोद्धार में भूमिका
- स्त्री-शिक्षा में महर्षि दयानन्द का योगदान
- स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का योगदान
- महर्षि दयानन्द का शिल्प और उद्योग के क्षेत्र में योगदान
- महर्षि दयानन्द सरस्वती का तत्कालीन राजाओं पर प्रभाव

महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२४-१८८३)

19वीं शताब्दी भारत के नवजागरण का काल है। महर्षि दयानंद भारत के उन महापुरुषों में अपना स्थान रखते हैं जिन्होंने भारत की आत्मा की रक्षा के साथ वैश्विक मानवता का संदेश भी दिया है। महर्षि दयानंद आधुनिक भारत के जागरणपुरोधा,आप्तचिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। "वेदों की ओर लौटो" का उद्घोष कर भारत को पुनः वैदिक स्वर्णिम युग के अलौकिक चिन्तनधारा से जोड़ा है। अपने ग्रन्थो और भाषणों से मानव जीवन दर्शन को कर्मसिद्धान्त, पुनर्जन्म तथा संन्यास की आवश्यकता के आधार स्तम्भ मानकर पुरुषार्थ चतुष्टय की पुन:स्थापना की। ऋषि दयानंद भारत की धरा के ऐसे तपस्वी क्रांतिकारी सन्यासी है जिन्होंने शास्त्र प्रवचन से लेकर आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक, इत्यादि सभी क्षेत्रों में अपना सुधारवादी दृष्टिकोण प्रदान किया है । स्वतंत्रता के काल में स्वराज्य शब्द का उद्घोष सर्वप्रथम 1876 में ऋषि ने दिया । पश्चात भारत में यह शब्द क्रांतिकारियों का प्रेरणामन्त्र बना । ऐतिहासिक साक्ष्य से हमें ज्ञात होता है कि महर्षि ने आगरा प्रवास काल में देश की प्रथम जनगणना के समय सभी आर्य समाजो को यह निर्देशित किया था कि सभी सदस्य अपना धर्म सनातन धर्म लिखवाया ।

प्रारम्भिक जीवन

दयानन्द सरस्वती का जन्म औदीच्य ब्राह्मण कुल में फाल्गुन दशमी, विक्रमी संवत् 1881 तदनुसार 12 फरवरी, 1825 ई. को टंकारा में हुआ था । जो वर्तमान में गुजरात के राजकोट जिले में आता है । उस समय यह मौर्वी रियासत में था। उनके पिता श्रीकर्षणजी कर-कलेक्टर होने के साथ ब्राह्मण कुल के समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे । स्वामी दयानन्द का जन्म मूल नक्षत्र मे होने से बाल्यावस्था में इनका नाम मूलशंकर रखा गया।

महाशिवरात्रि को बोध

शिव के अनन्य भक्त बालक मूलशंकर को उनके पिता ने महाशिवरात्रि के अवसर पर व्रत रखने को कहा। शिव मंदिर में रात्रि में बालक ने चूहों को शिव लिंग पर उत्पात मचाते देखा तो उनको बोध हुआ कि यह पुराण वर्णित शंकर नहीं है, जिसकी कथा उसे सुनाई गई थी। उसके बाद मूलशंकर मन्दिर से घर चले गये और उनके मन में सच्चे शिव के प्रति जिज्ञासा उठी।

गृह त्याग

अपनी छोटी बहन और चाचा की हैजे के कारण हुई मृत्यु से वे जीवन-मरण के अर्थ पर गहराई से सोचने लगे और सत्य की खोज और मृत्यु के रहस्य जैसे विषयों पर गंभीर प्रश्न करने लगे। इस अवस्था से माता-पिता चिन्तित रहने लगे। माता-पिता ने उनका विवाह किशोरावस्था के प्रारम्भ में ही करने का निर्णय किया (१९वीं सदी के आर्यावर्त (भारत) में यह आम प्रथा थी)। लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और वे 1846 में सत्य की खोज में निकल पड़े।

ज्ञान की खोज

गुरु दक्षिणा में गुरु विरजानन्द ने केवल कुछ लौंग लिये और संसार में फैले अज्ञान, अंधकार,मूढ़ता को दूर करने का उपदेश व सफलता का आशीर्वाद दिया । ग्रन्थ प्रमाण्य हेतु सूत्र दिया- मनुष्य कृत ग्रन्थों में ईश्वर की निंदा है ऋषिकृत ग्रंथों में नहीं। यही आर्ष प्रमाण मान्य हैं। वेद स्वत: प्रमाण शेष ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात्
स्वामी दयानन्द सरस्वती

वैचारिक आंदोलन - आर्य समाज की स्थापना

महर्षि दयानंद ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1932 (सन् 1875) को गिरगांव मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के नियम और सिद्धांत प्राणिमात्र के कल्याण के लिए है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। महर्षि दयानन्द का जीवन वेदों की रक्षा,सनातन धर्म को पुन: स्थापित करने में आहुत हुआ। विशाल काल के अन्तराल से भारत में अविद्या ने धर्म कर चोंगा पहन लिया था जिसे हटाने का प्रयत्न महर्षि ने किया। इसके लिये शास्त्रार्थ किये,ग्रन्थ लिखे,छपवाये,पूरे भारतवर्ष में व्याख्यान दिये,विशिष्ट गणमान्यों से भेंटवार्ता व पत्राचार किये। भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर आस्तिकता के चिंतन पर नई अलख जगाई।महर्षि की पाखण्ड खण्डिनी पताका हरिद्वार ही नहीं समूचे भारत में लहरा उठी। महर्षि ने वेदों का भाष्य (निरुक्त- प्रक्रिया आधारित) ऋग्वेदादिभाष्य- भूमिका, संस्कार विधि,सत्यार्थ-प्रकाश जैसे अन्यान्य महान् ग्रंथों के प्रणयन के साथ- साथ वैदिकवर्ण व्यवस्था, शुद्धि आन्दोलन, नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह,स्वदेशी-स्वराज्य स्थापना का विचार, आर्ष शिक्षा, गो-रक्षा आन्दोलन जैसे अनेकों सामाजिक क्रांतिकारी सुधार किये।

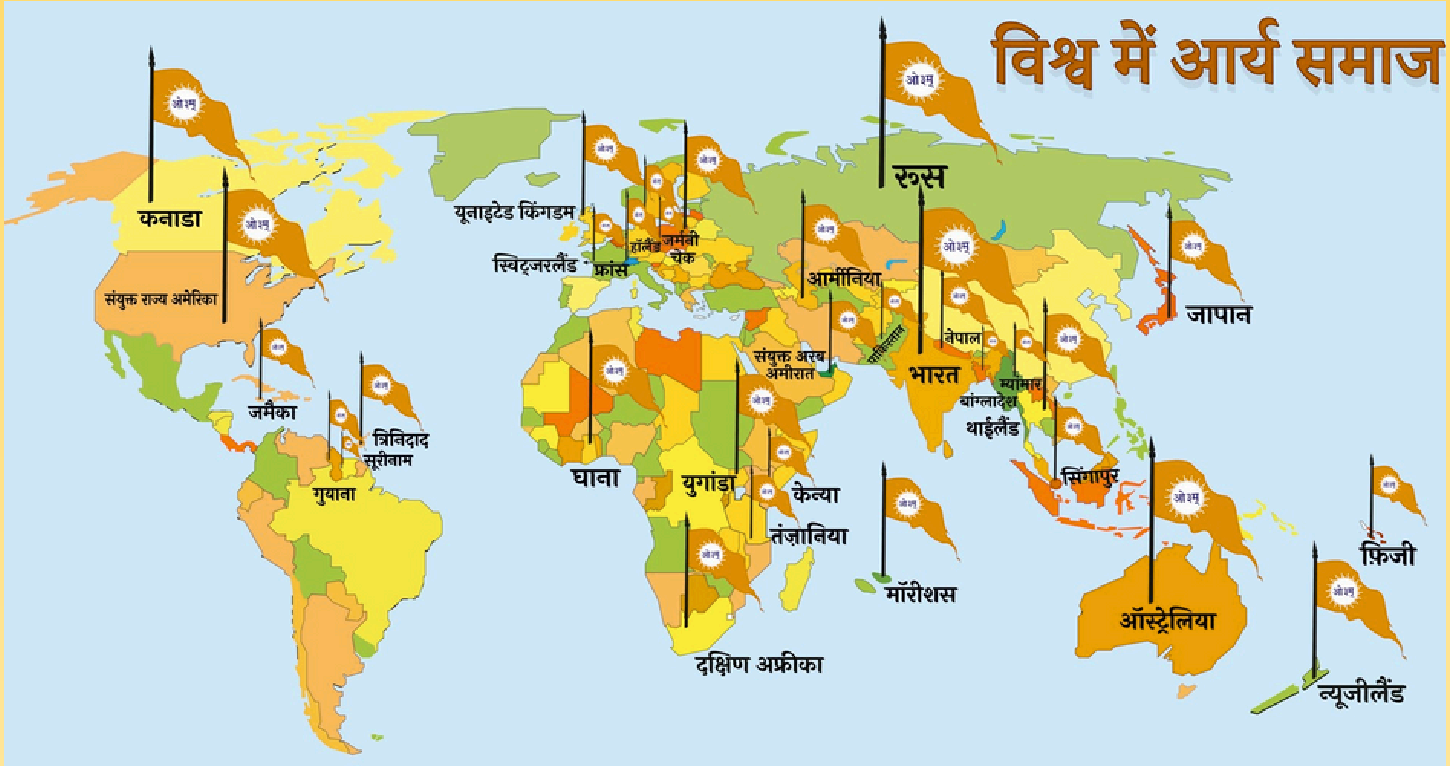

दिल्ली के दर्शनीय स्थल

132